पुष्यभूति राजवंश का महान शासक हर्ष: शासन, सामाजिक,आर्थिक राजनीतिक जीवन

डॉ विभूति भूषण
सहायक प्राध्यापक (अतिथि)

SNSRKS, कॉलेज सहरसा

भाग:-2

राज्य विस्तार (Harshvardhan ka samrajya Vistaar)

हर्ष के गद्दी पर बैठने के समय उसके सम्मुख प्रमुख रूप से तीन समस्याएं थी| पहला राजश्री की खोज, दूसरा कन्नौज के उत्तराधिकार की समस्या व तीसरा वर्धन व मौखरी वंश की सुरक्षा की समस्या|

कन्नौज के उत्तराधिकार की समस्या को लेकर कन्नौज के मंत्रियों एवं राज्यश्री ने यह निर्णय लिया कि कन्नौज का राजा हर्ष होगा| इस तरह 606 ई. में Harshvardhan ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाई और यहीं से दोनों राज्य पर शासन करना प्रारंभ किया|

Harshvardhan का कश्मीर, पंजाब एवं कामरूप को छोड़कर लगभग संपूर्ण उत्तर भारत पर आधिपत्य था| उसने सर्वप्रथम पूर्वी भारत का अभियान किया| उसने कामरूप के भास्करवर्मन ने मैत्री स्थापित की| उसने शशांक को पराजित कर बंगाल पर अधिपत्य स्थापित कर लिया| मगध का शासक भी उसके अधिनस्थ था| उसने बल्लभी नरेश ध्रुवसेन द्वितीय को पराजित कर अधीन बनाया| इस प्रकार बंगाल में पुंडवर्धन से लेकर पश्चिम में व्यास नदी तक हर्ष ने साम्राज्य विस्तार किया|

Harshvardhan ने सिंध की भी विजय की जहां का राजा शुद्र था एवं बौद्ध धर्म अनुयाई था| Harshvardhan का सबसे महत्वपूर्ण युद्ध वातापी के चालुक्य पुलकेशिन द्वितीय से हुआ| हर्ष ने कश्मीर नेपाल तथा उड़ीसा को भी जीता| उसने चीन के साथ राजनयिक संबंध स्थापित किया| 641 ई में हर्ष ने एक दूतमंडल चीन भेजा तथा चीन से तीन दूतमंडल (641, 643, 646 ई.) उसके दरबार आए|

इस प्रकार उत्तर भारत में हिमालय से लेकर दक्षिण में विंध्य पर्वत एवं नर्मदा नदी तक तथा पूर्व में कामरूप से लेकर पश्चिम में सौराष्ट्र तक का विशाल क्षेत्र हर्ष के प्रभाव क्षेत्र में था|